काव्य-संग्रह

तैरते बादलों में एक शाम

रमेश मराठा

रमेश मराठा की शायरी का तआल्लुक़ कश्मीर के प्राकृतिक दृश्यों से है- बर्फ़ के ढके हुए पहाड़ों की आकाश को छूती हुई चोटियाँ, तेज़ रफ़्तार नदियाँ, बरसात में भीगे हुए सरसब्ज़ पेड़ों के साये, साँस लेती हुई जिंदा जावेद सुब्हें, हाथों में हज़ार आईने लिये हुए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ झरने, रंग-बिरंगे पंछियों के मनमोहक कहकहे, इत्र में डूबी हुई हवाएँ, शामों के झुटपुटे और घरों को लौटते हुए पंछियों की लम्बी-लम्बी कतारें, फूलों से लदी हुई हसीन वादियाँ, पत्थरों से सर फोढ़ते हुए पुर-शोर पहाड़ी नदी-नाले, मन को मोह लेने वाले प्राकृतिक दृश्य और दूर किसी चरवाहे की बांसुरी से निकलती हुई दर्द भरी लय से गूँजती हुई घाटियाँ रमेश मराठा की शायरी के लिए मवाद फ़रमाहम करती हैं। कठुआ से होते हुए भी वह महसूस करते हैं कि वह किसी चिनार के साये में बैठ कर शायरी कर रहे हैं।

खुदा करे उनका दूसरा काव्य संग्रह 'तैरते बादलों में एक शाम' में मराठा जी की शायरी दूर-दूर तक शुहरतों और नेकनामियों की बस्तियाँ क़ाइम करे! आमीन!!

- राजेन्द्र नाथ 'रहबर'
(शिरोमणि उर्दू साहित्यकार,
पंजाब सरकार)
मोबा. नं. : 0186-2227522
9417067191

तैरते बादलों में एक शाम

(काव्य-संग्रह)

तैरते बादलों में एक शाम

रमेश मराठा

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-93-87622-33-3

अयन प्रकाशन

1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030

दूरभाष : 9818988613

e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

website : www.ayanprakashan.com

•

मूल्य : 250.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2018

TAIRTE BADLON ME EK SHAM (Poetry)

by Ramesh Maratha

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

समर्पण

प्रातः स्मरणीया, परम आदरणीया
परम पूजनीया एवं मेरी सच्ची मार्गदर्शक
माता जी
स्व. रूपावती जी की
स्मृति को सप्रेम भेंट

आभार -

1. श्री राजेन्द्र नाथ रहबर
2. डॉ. धर्मपाल साहिल
3. श्री अग्निशेखर
4. श्री सतीश विमल
5. सुश्री सुधा शर्मा
6. सुश्री प्रिया राजपूत
7. श्री कुलदीप सपरू
8. श्री वीर जी

ख़्वाबों के आगोश में सिमटे हसीं मंज़र

कुदरत की खूबसूरती के कवि रमेश मराठा 'हथेली के आईने में' के बाद दूसरा काव्य संग्रह **'तैरते बादलों में एक शाम'** लेकर अपने चहेते पाठकों के रूबरू हुए हैं। कवि मराठा पर ईश्वर की अपार कृपा है, वह जितनी पुरकशिश आवाज़ के मालिक हैं उतने ही खूबसूरत ढंग से वह अलफाज़ को कविता में पिरोना जानते हैं। इनकी कविताओं को पढ़ते-सुनते, व्यक्ति मंत्र मुग्ध हो कर धरती के स्वर्ग कश्मीर की मनमोहक वादियों में घूमने लगता है। उनकी कविताओं में उस अकथनीय एवं अकल्पनीय सौन्दर्य के अनुपम दृश्य, बर्फीली चोटियाँ, डल झील पर तैरते शिकारे, कल-कल करती पहाड़ी नदियाँ, हरे-भरे चिनार, झरनों का संगीत, महकती हवा में गीत गाते परिन्दों की परवाज़, फूलों से सजी हसीन वादियां, पत्थरों को तराशता किनारों संग अठखेलियाँ करता नदी-नालों का पानी, अपने अनोखे जादू से बांध लेने वाले स्वर्गिक कुदरती नज़ारे, डल झील के लरजते पानी पर पँख फड़फड़ाती मुरगाबियाँ, परिन्दों की चहचहाहट, महकती सुबह और दरख्तों के लम्बे सायों से घिरती शाम, पेड़ों की सरसब्ज शाखाओं पर बने घोंसलो में लौटते पक्षियों का कलरव, हर तरफ, हर पल, हर जगह, बिखरे शबनम के मोतियों से बनते इन्द्रधनुषीय रंगों के मंज़र तथा कश्मीरियों के दर्द से बोझिल हवा आदि को प्रतीकों व बिम्बों के रूप में प्रतिबिम्बत किया गया है। जिसे पाठक आँखें बंद करके महसूस करता है जो एक-एक करके उसकी रूह में उतरते जाते हैं।

कवि रमेश मराठा लगभग प्रत्येक कविता में इन्हीं कुदरती हसीन वादियों में छिपी हुई अपनी किसी चाहत को पपीहे की भाँति काव्यात्मक लय में पुकारते हैं। अपनी सरजमीं की अविस्मरणीय अकल्पनीय यादों को शब्दों का लिबास पहनाने की कोशिश करते हैं। इन कविताओं में कवि कहीं ख़ुद से, कहीं कुदरत से तो कहीं कुदरत के माध्यम से अपनी रूहे रवां से गुफ्तगू करते दिखाई देते है। यह अंदाज-ए-गुफ्तगू ही उन्हें एक उम्दा शायर का दर्जा दिला देता है।

अपने प्रथम काव्य-संग्रह 'हथेली के आईने में' की कविताओं की भाँति ही इस संग्रह की कविताओं में भी अपने साथी का इन्तजार है, बीते पलों की स्मृतियाँ हैं, अधूरे ख़्वाब हैं, ख़्वाबों में हकीकत की तलाश है, सिसकती तड़पती, लरज़ती हसरतें हैं। किसी अपने को मनाने की इल्तिजा है। कवि मराठा अपनी रूह से महसूस किये अहसासों, सूक्ष्म ज़ज़बातों तथा अपने भीतर व बाहर के मौसम को एकदम अनूठे भौतिक कुदरती प्रतीकों से प्रकट करने की महारत रखते हैं, इन्होंने ही रमेश मराठा की कविताओं को मौलिकता, नवीनता तथा ताज़गी बख़्शी है। जो कवि रमेश मराठा की कविताओं की पहचान है तथा उन्हें अन्य कवियों से अलग करती है।

यही वह खूबी है, जिस कारण उनकी कविताओं को हरेक वर्ग व उम्र का पाठक पसंद करता है। कवि मराठा अपनी किसी उच्च कलात्मकता का दावा पेश नहीं करते है, लेकिन **'तैरते बादलों में एक शाम'** की कविताएं रमेश मराठा के काव्यात्मक कद को बरकरार रखने में सहायक सिद्ध होती हैं।

आशा करता हूँ कि रमेश मराठा के दूसरे काव्य-संग्रह की कविताएं भी पाठकों की संवेदनाओं में हलचल मचाने के साथ-साथ उन में नयी ऊर्जा, कुदरती प्रेम तथा नया विश्वास पैदा करेंगी, जो कवि तथा पाठक के मधुर सम्बन्ध को चिरजीवी बनाने में सफल भूमिका निभाएँगी तथा अपनी दूसरी अनुपम कृति के

लिए अनगिनत पाठकों की असंख्य मुबारकों तथा दुआओं का हकदार बनाएगी।

आमीन!

— डॉ. धर्मपाल साहिल
(राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित)
(प्रिंसिपल)
पंचवटी, एकता एन्कलेव, गली- 2 (बूलांबाड़ी)
डा.खा.- साधु आश्रम, होशियारपुर(पंजाब)
dpsahil_panchvati@yahoo.com
09876156964

रमेश मराठा : प्राकृतिक सौंदर्य का शायर

रमेश मराठा शायरी की दुनिया का एक खूबसूरत नाम है। मराठा जी का तआल्लुक आकाशवाणी (जे. एंड के.) से है और जो लोग आकाशवाणी के प्रोग्राम सुनते हैं उनके कान मराठा जी के नाम, उनके काम और उनकी आवाज़ से बखूबी आशना हैं। कुछ साल पहले उन्होंने आकाशवाणी का एक प्रोग्राम 'यादें बन गईं गीत' के प्यारे नाम से शुरू किया था। इस प्रोग्राम की शोहरतें हर तरफ फैल गयी हैं और हज़ारों, लाखों श्रोता इस प्रोग्राम से आबद्ध हो गये हैं। मराठा जी की आवाज़ एक चलता हुआ जादू है। उनकी आवाज़ में वो कशिश है जो कोई सुनता है वह मराठा जी का प्रशंसक हो जाता है। 'हथेली के आईने में' के बाद 'तैरते बादलों एक शाम' उनका दूसरा काव्य संग्रह है।

रमेश मराठा जी कश्मीरी हैं- फूल की भांति सुंदर और खिले हुए। इनकी शायरी का तआल्लुक कश्मीर के प्राकृतिक दृश्यों से है- बर्फ़ के ढके हुए पहाड़ों की आकाश को छूती हुई चोटियाँ, तेज़ रफ़्तार नदियाँ, बरसात में भीगे हुए सरसब्ज़ पेड़ों के साये, साँस लेती हुई जिंदा जावेद सुब्हें, हाथों में हज़ार आईने लिये हुए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ झरने, रंग-बिरंगे पंछियों के मनमोहक कहकहे, इत्र में डूबी हुई हवाएँ, शामों के झुटपुटे और घरों को लौटते हुए पंछियों की लम्बी-लम्बी कतारें, फूलों से लदी हुई हसीन वादियाँ, पत्थरों से सर फोढ़ते हुए पुर-शोर पहाड़ी नदी-नाले, मन को मोह लेने वाले प्राकृतिक दृश्य और दूर किसी चरवाहे की बांसुरी से निकलती हुई दर्द भरी लय से गूँजती हुई घाटियाँ रमेश मराठा की

शायरी के लिए मवाद फ़रमाहम करती हैं। कठुआ से होते हुए भी वह महसूस करते हैं कि वह किसी चिनार के साये में बैठ कर शायरी कर रहे हैं।

वह शायरी क्या जिसमें महबूब का ज़िक्र न हो। मराठा जी भी किसी हक़ीक़ी या काल्पनिक महबूबा की याद में कभी-कभी कविता कहते हैं। मराठा जी ने मेरी एक नज़्म-

तेरे खुशबू में बसे ख़त मैं जलाता कैसे
तेरे ख़त आज मैं गंगा में बहा आया हूँ

को अपनी सुंदर आवाज़ में रिकार्ड कराया है और वह सी.डी. सुनने से तआल्लुक़ रखती है।

खुदा करे उनका दूसरा काव्य संग्रह 'तैरते बादलों में एक शाम' में मराठा जी की शायरी दूर-दूर तक शुहरतों और नेकनामियों की बस्तियाँ क़ाइम करे! आमीन!!

- राजेन्द्र नाथ 'रहबर'
(शिरोमणि उर्दू साहित्यकार, पंजाब सरकार)
1085 सराय मुहल्ला
पठानकोठ-145001 (पंजाब)
मोबा. नं. : 0186-2227522 9417067191

संवेदनशील आग्रहों की कविताएँ

भूमण्डलीकरण, प्रौद्यिगिकी, सूचना क्रांति के इस दौर में जिस तेज़ी से हमारे समय, समाज और चीज़ों के अर्थ बदल गये हैं; तथा हमारे पारंपरिक जीवन मूल्य, मानवीय संबंधों की गरिमा के विघटन के साथ ही जिस गति से नई वैश्विक व्यवस्था एक चमकीली और लुभावनी अपसंस्कृति हमें बेबसी की विभीषिका में उलझा रही है, ऐसे संवेदनहीन दिनों में कश्मीरी भाषी हिंदी कवि रमेश मराठा की कविताएँ पाठक को आश्वस्ति सी दे जाती हैं।

रमेश मराठा की कविताएँ सादगी के सौंदर्य के साथ प्रेम, प्रकृतियों की ऋजुता की केंद्रीय संवेदन से आप्लावित दिखती हैं। कवि की चिंताएँ हर पाठक की चिंता और अकुलाहट को स्वर देती हैं। रमेश मराठा की प्रेम की कविताएँ होते हुए भी सामाजिक सरोकारों से संबंद्ध होकर प्रश्न करती मिलती हैं। 'क्या अब यहाँ इबादतगाहों में गुनाहगारों की सुनी जाती है।' यह बहुत बड़ा प्रश्न है। उन्हें कभी यह समय ठहरा हुआ लगता है फिर भी उसे 'भटकती रूह को सहराओं में सुकून' की तलाश ही नहीं प्रतीक्षा भी है। कवि बेबसी के कोहरे में जीवन को कैद दिखाता है। उसका आहत मन चीत्कार कर उठता है- 'ख्वाबों की सरहदें नहीं होतीं'। वह समय के घुप्प अंधेरों में स्वयं के साथ यात्रा पर निकलता है पागलों की तरह। उसे दुख है कि देखते-देखते मानवीय संबंध किस तरह रेत के टीलों में बदल गये हैं।

रमेश मराठा की कविताएँ अपनी सीधी सच्ची भाषा में बिना वैचारिक पूर्वाग्रह दुराग्रह के मानवीय संबंधों की बात करती हैं संवेदनशील आग्रह के साथ...."

जम्मू

- अग्निशेखर

इन सरगोशियों में है सौंदर्य की इक कायनात

◆सतीश विमल

आज से छः वर्ष पूर्व मेरे मित्र रमेश मराठा ने मुझे चौंका दिया। अपनी हिंदी कविताओं का संग्रह 'हथेली के आईने' की एक प्रति मुझे भेंट की। मधुर आवाज़ के धनी रमेश जी के साथ मेरा रिश्ता अभी तक आवाज़ का था। विख्यात प्रसारक आज एक कवि में रूप में मेरे समक्ष था। अब हमारे बीच एक नयी रिश्तेदारी हो गयी थी.... कविता की रिश्तेदारी। मैंने ये कविताएँ कई बार पढ़ीं.... लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ प्रेम और पीड़ा का एक विस्तृत संसार पाया। प्रेम और पीड़ा हर स्तरीय साहित्य के लिए लाज़िमी हैं। 'हथेली के आईने में' कविता की ये पंक्तियाँ लाजवाब हैं :

"तुम्हारी हथेली के आईने में मैंनें अपने चेहरे के बिखराव को महसूस किया है। कितना बदल गया है यह मेरा चेहरा। इसकी मासूमियत में जन्म के रिश्ते मौजूद हैं.... तुम्हारी हथेली के आईने में मैंने अपने आने वाले कल के नसीब को अपनी ही उम्मीदों से नापा है क्योंकि सदियों के सफ़र को हमने अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है. ..."

रमेश मराठा कश्मीर की पावन धरती के सपूत हैं। धर्मांधता ने जो हालात कश्यप की भूमि में लगभग तीन दशक पहले पैदा किए उन्हीं हालात की मार इस प्रसारक-कवि पर भी बुरी तरह पड़ी। निर्वासन का दर्द इनके भीतर बहुत गहरे तक उतरा और निरंतर पीर बनकर इनके साथ रहा। इस पीड़ा की कड़वाहट कभी बाहर नहीं आई, शिव की तरह

उस पीर का विष इन्होंने अपने भीतर ही समाहित कर दिया, बाहर आया तो केवल पीर का सुसज्जित एवं सुसंस्कृत रूप। दक्षिण भारत के जंघम-गीतों में से एक याद आया :

"तुम ने मन-मस्तिष्क पर प्रहार किया
घावों से रिस रहा है विष
मेरा जंघम मेरे भीतर मुँह
खोले विषपान के लिए तय्यार है
वो सारा विष पी जायेंगे
और मेरे मन-मस्तिष्क को घाव मुक्त कर देंगे
मैं समस्त लोकों में क्षीर बाँटता फिरूँगा
अंत तक।"

रमेश मराठा के भीतर भी कोई न कोई जंघम रहा है जिसने इसे विष से मुक्ति दी है, विष की कड़वाहट से आज़ाद कर दिया है.... तभी तो पीर का जश्न मना पाते हैं अपनी कविताओं में। कभी विरह की अभिव्यक्ति भी पूजा के किसी मंत्र से शुद्ध उच्चारण का सा आनंद देती है।

कवि मन समय के कठिन प्रश्नों से सीधा संवाद स्थापित करता है। पर उस परिचर्चा को प्रसारित नहीं करता अपितु उस संवाद के सूक्ष्म बिंदुओं को सरगोशियों में अदा करता है। रमेश मराठा की ये कविताएँ वही सरगोशियाँ हैं। इन सरगोशियों में सौंदर्य की एक कायनात बसी हुई है।

'तैरते बादलों में एक शाम' रमेश की कविता का दूसरा पड़ाव है। धूम-धड़ाके, शोर-शराबे, भाग-दौड़ के बीच कवि मानवीय अस्तित्व के प्रति अपनी और अपने संबंधों की जवाबदेही को कविता के पेराइन में डाल देता है, तो इस पेराहन के दामन पर सद्भाव और प्रेम के सितारे झिलमिलाने लगते हैं। इन्हीं सितारों की रोशनी इन पन्नों पर बिखरी हुई है।

'यादों की परछाइयाँ' विभिन्न रूपों में अर्थों के सायबानों का रूप धार लेती हैं। महिम भट्ट के अनुसार वस्तुओं के दो रूप हैं : एक

सामान्य और दूसरा विशेष। सामान्य रूप तो चर्मचक्षुओं से सभी को दिखता है, पर विशेष रूप का साक्षात्कार भावचक्षुओं से होता है। इस संग्रह में कई जगह एक बिम्बात्मक काव्य के द्वारा वस्तुओं के असाधारण स्वरूप को उन्मीलित करने के लिए प्रयास किया गया है। कई जगह प्रेम को परिभाषित करने का प्रयोग हुआ है। प्रणय की सर्दी में जीवन बचाने के लिए स्वयं को प्रेम के कंबल में छुपा लेते हैं।

जटिल जीवन में सहजता की खोज हैं रमेश मराठा की ये कविताएँ। आधुनिकता की अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति की कविताएँ हैं ये। मेरे एक अभिन्न कवि मित्र हर्षदेव माधव की भाषा में कहें तो ये कविताएँ वृक्ष की तरह पनपी हैं, वर्षा की तरह फैली हैं.... पर हाँ बम की तरह फूट कर बिखरी नहीं हैं। मराठा की कविताओं में दूर तक सफ़र करने की क्षमता है। सरहदों के पार तक :

"बंद आँखों के ख़्वाबों की सरहदें नहीं होतीं
रोज़ चला जाता हूँ मैं
उस पार अपने महबूब से मिलने...."

मूलतः प्रेम-कवि रमेश मराठा अपनी प्रेम संबंधी सहज अनुभूतियों की काव्याभिव्यक्ति के लिए विभिन्न प्रयोग करते हैं। दर्द की दौलत जो इनके पास है उसका मुहाफ़िज़ भी प्रेम ही है। इनकी कविताओं में शब्द और संवेदना का सार्थक विनियोग आनंद को जन्म देता है। ध्वनियों द्वारा माइक्रोफोन से जादू जगाने वाला मराठा जब शब्द की नौका लेकर रचना-यात्रा पर निकल ही गया है तो कह सकता हूँ कि मंज़िल अभी दूर है.... यात्रा के कई और पड़ाव बाकी हैं.... अभी बहुत कुछ लिखना शेष है.... संभावनाओं के द्वार खुले हैं.... हम तो यही कहेंगे कि 'अल्लाह करे ज़ोरे-क़लम और ज़ियादा'।

कविता के इस लंबे सफ़र के लिए शुभकामनाएँ।

कविता-क्रम

ख़्वाबों के आगोश में

जाने ये कौन मेरी रूह को छूकर गुज़रा
हमेशा
मेरे साथ रहते भी
कभी मेरे पास न रह सके
जाने ये कौन इन घुप्प अंधेरों में
अपनी नरम-ओ- नाज़ुक मुलायम
अंगुलियों से मेरे गालों
को सहलाते गये
देर रात तक मुझे
अपने आँचल में छिपाते गए
माज़ी की यादें सुनाकर रूला गए
कटा कटा सा जीवन
धुंधले ख्वाबों के आग़ोश में
तुम्हें तलाशने की एक
नाकाम कोशिश
पर ये ख़्वाब बनते हैं
टूटने के लिए
हाँ, सिर्फ टूटने के लिए। □

गुलपाश

ये चन्द अलफ़ाज़ इन सासों
को ताज़गी बख़्शते
तुम्हारी सुरीली आवाज़
रूहों से बात करती
यका-यक जिस्म पिघलते
इस वाद-ए-गुलपाश में यहाँ
दर्दीले नग़मों को हम
अलविदा कहते
या जन्म देते
नई सुबह में इन साज़ों पे छेड़ते
मख़मली धुनें
तुम्हारी आवाज़ के साथ आवाज़ मिलाते
ताकि एक गीत को जन्म मिलता
नयी अदा-ओ-अंदाज़ के साथ। ❑

पीले पत्तों के मौसम में

कहीं कोई ख़्वाब कभी देखा था
यरकानी पत्तों के मौसम में
आँखों से बहते थे दर्द के आँसू
होंठ कंप-कपाया, थर-थराया करते थे
धड़कते दिलों की सदा यहाँ
सुनता है कौन
कौन यहाँ किसी को अपना
कहता है
कोहरे की चादर में लिपटी
रूहों की ख़ामोशी
कोई तो महसूस करे
काश! कोई फिर से लौट आए
इन दर्दीली पथरीली रातों
को हरा करे
मुझे चाँद का अक़्स दिखाए
इन सुनसान रातों में यहाँ रोते बिलख़ते
बच्चों की सिसकियों को चुप कराए
एक ख़्वाब देखा था मैंने
इन पीले पत्तों के मौसम में। ☐

परछाइयों के अक़्स

काश! तुम होते हमारे
इन बहती हवाओं के संग तैरते
पानियों में पत्थर फैंकते
और इस पानी को तुम्हारी हथेली
पे रख कर ताकि मैं अपना
अक़्स ढूँढ लूँ और
अपनी माज़ी अपने अतीत के
दर्द को भूलाने की कोशिश करूँ
काश! तुम हमारी परछाई बन पाते
मैं पकड़ता और
तुम भाग जाते– तुम भाग जाते
मैं फिर से पकड़ने की कोशिश करता
काश! तुम बादल बन जाते
बरसते–और मैं भीग जाता
तुम आकाश के किसी में
छिपकर मुस्कुराते और
मुझे इन हवाओं के हवाले करते। ❑

कि एक दिन

वो जो चाहतें बाँटते रहे सर-ए-आम
अपनी खुशियों को नीलाम करके
बावजूद इसके चेहरे पे
मुस्कुराहट बनी रही
क्योंकि वो जीने का
अंदाज़ जानता था
जानता था दिल बहलाना
कहीं दूर पंतग की डोर पकड़ कर खुले
आकाश में पंतग उड़ाने का
हुनर जानता था
उसकी एक मुस्कान के लिए
अपनी मुस्कुराहट फिदा करता था
ये सोच कर कि एक दिन
एक
नन्हीं कली खेलेगी आंगन में
ढेर सारी मुस्कानों के साथ। ❑

नक़शे पां

पन्हगाहों में पन्हा लेना अब
ज़माने का दस्तूर हो चला है
वक़्त के साथ साथ सूरतें बेशक
बदल चुकी हों पर
एतबार पहले ही की तरह
बरक़रार है
सोहबतें सही रास्ता दिखाती हैं
और मंज़िल का पता भी
बताती हैं
चाहियें हम दूर तक चलते रहें
कदम अपने पीछे कदमों के निशान
छोड़ ही जाते हैं। ❑

गुलाबी मौसम में

गुलाबी मौसम में खुशबू की
तरह महकते रहो
जानते हैं मुस्कुराहट है
तेरे हुस्न का ज़ेवर
यूँ ही मुस्कुराते रहो
जब मोहब्बत तुम से है
तो ख़्वाबों के आईने में हमारे
बनकर रह जाओगे
आज रहने दीजिए ये
गिले शिकवे
आज की शब हम न जाने देगें
खुशबू बनकर आए हो
एक तवील मुद्दत के बाद
यूँ ही इस गुलाबी मौसम में
महकते रहो
हमारी खुशबू बनकर। ❑

बुलबुला

वो था पानी का बुलबुला

जो बनता रहा मिटता रहा

मिटता रहा बनता रहा

कभी हथेली पे ठहरा नहीं

ज़मीन पे रुका नहीं

कभी बादल बना तो

कभी शबनमी बूंद

मैंने उसे तैरते पानियों में

बनते मिटते बिखरते देखा

इन ख़ामोशियों में फ़ना होते हुए देखा

क्या ये मेरे गुज़रे कल का

तस्अववुर था

जो शायद कभी लौटता नहीं। ❑

आते जाते मौसम

मौसम आए मौसम जाए
पर तुम कभी न आए
तुम आग़ाज़ थे रौशनियों के
सफ़र में हम सफ़र थे
मील के पत्थर थे
मोहब्बत की सरहदों के निगहबान थे
मेरी हर कोशिश की शुरूआत थे
और सुबह की पुकार थे
कितने ही मौसम आए
कितने ही मौसम जाए
क्यों नहीं कभी तुम लौट आए। ❑

तैरते बादल

बेशक परिसतिश में वक़्त गुज़रता
जो तुम
रू-ब-रू मुझे अपनी
पहचान कराते
रिश्तों को जिताते
मेरे जज़्बात को अपनी
पन्हाओं में मेहफूज़ रखते
अपनी इबादत दुआओं में मुझे
शामिल कराते
मै जानता हूँ मैंने बे-इन्तिहा
प्यार किया है तुम से
जिस की गवाही आसमानों में
तैरते बादल हमेशा से
देते आ रहे हैं। ❑

वजूद ज़िन्दा है

आज
मन क्यों बहकता है
भटकता है
अपने अतीत को याद करके
ग़रचे बदल जाती हैं तस्वीरें पर
पर नहीं बदला
हमारे तुम्हारे
बीते कल का मौसम
वो मौसम जिन में तुम
अब भी शामिल रहते हो
मेरी धड़कनों की तरह
तुम कहते रहे जीने के लिए
प्यार चाहिए
और मैं कहता रहा
मुझे प्यार के लिये
जीना है
इसीलिए शायद मेरा वजूद ज़िन्दा है। ❑

उम्मीदों का लिबास

बरसते बादल
घूमती हवाएं
भीगती मुस्कान
ये खूबसूरत सुबह
जीवन संघर्ष की डगर पर
गामज़न
उम्मीदों का लिबास पहने हुए
हसरतें हैं
किसी का साथी न छूट जाए
कोई किसी के जज़्बात
से न खेलें
और अहसास मोहब्बतों का
यूँही बरकरार रहे। ❑

गगन के उस पार

मैं कई युगों से बैठा हूँ
पर चाँद से कोई उतरा नहीं
तुम ने जो कभी कहा था
आऊँगी- तुम्हारी चौख़ट से गुज़रूँगी
रखूँगी क़दम दहलीज़ पर
तुम्हें आवाज़ दूँगी
बुलाऊँगी
और ले जाऊँगी अपने साथ दूर
दूर गगन के उस पार
बादलों के क़रीब
जहाँ मौजूद हैं हमारी बस्तियाँ
हैं वहाँ हमारे अपने तुम्हारी ही तरह
बैठा हूँ कई युगों से
इसी इंतज़ार में
पर चाँद से कोई उतरा नहीं। ❑

दस्तकें

पेड़ों की छाओं में

नीले गगन के तले

हवाओं की सरसराहट में

रूख़सार पे मुस्कान

शब–औ– रोज़ ख़्वाबों में

दस्तक देना

पथरीले रास्तों को हरा कर

मेरे भटकाव की साज़िश से

मुक्त कराना

तेरा अहसान

करम

नवाज़िश

शुक्रिया

नहीं भूलेंगे इस अहसान को। ❑

ख़ामोश पानी की लकीरें

जो तुम रहते पास-पास
होते साथ-साथ
फ़िर फ़ुर्सत में हम तुम्हें चाहते
पर काश फ़ुर्सत होती
दीवानेपन की हदों को दर किनार कर
ऐसा ख़्वाब अपनी आँखों में बसाने से क्या हासिल
जिस ख़्वाब की ताबीर न हो
और मिला जब भी तुम से
जो भी कभी
वो ख़ामोश पानी की लकीरों जैसा ही तो है। ❑

मख़मली दुआएँ

ग़र फिर से जब तुम कभी
लौट आओगे मेरी दुनिया में
ये हवाऐं यहाँ की फिज़ाएं
और इन कंपकपाती धड़कनों को हम
रखेंगें सम्भाल के
यरकानी पत्तों के इस मौसम में अपनी
मख़मली दुआओं से
बज़म-ए-इलहाई में शायद
हमारी इल्तिजा सुनी जाए
सुना है बसते हैं रब यहाँ
और उस की रहमतों का
कोई हिसाब नहीं। ❑

फ़ितरत

क्यों लगता है बरसों से
शिनासाई है
ये मख़मली मौसम बेताब है
तेरे पैरों की चुभन के लिए
बदलती रूत्त
ये सरगोशियाँ करती हवायें
तुम्हारे दुपट्टे की खुशबू अहसास है मेरा
क्या तुम्हें याद है
भरी तपती दुपहरी के दामन में
यहाँ की फिज़ाओं को इन पानियों में
हम बहाया करते थे
और
इन सूफ़ियाना धुनों में तुम्हारी
आवाज़ से आवाज़ मिलाना
हमारी फितरत में जो
शामिल है। ❑

भीगे मौसम में

लब पे है नाम तेरा
और ज़िक्र भी मेरा ही होता है
यहाँ इन पानियों में लहरें
उठती तो हैं
फिर भी अक़्स
बिखरते नहीं
ये साहिल रहते हैं बेताब
इन पानियों को छूने के लिए
यहाँ शाम होते होते मुरझा जाए
अब यह भीगे मौसम छिप गये
तुम हो गए बुलबुल मैना तोता
इन काली ख़ामोश घटाओं ने
घेरा है सितारों को
चाँद को
मेरी परछाई और तुम्हारी मुस्कानों को। ❑

यादों का मौसम

मौसम है तुम्हारी यादों का
जब महीना था सावन का
तब तुम लौट आए थे नंगे पाँव
भीगते भीगते भीगे थे
कंपकपाते होंठ
चेहरे की रौनक और सादगी से भरा
क़द–ए–आदम जिस्म का
लरज़ना लाज़मी था-
धड़कने उदासी में लिपटी हुई थी
शायद अपना दर्द बयाँ कर रही थी
ग़र मेरी पन्हाओं में 'जो' तुम
ठहरते पल भर के लिए
फिर से खिल उठता तुम्हारी
यादों का मौसम 'बीते मौसम की तरह'। ❑

ख़्वाबों की पोशाक

काश! ये बादल टुकड़े टुकड़े हो जाता
फिर बरसता
भीग जाते ये ख़ामोश चिनार
ये मख़मली घास
यहाँ की ये ताज़ा हवा
और
यहाँ की ग़मज़दा मुस्कान
तभी हम अपनी चुप्पी तोड़ लेते
फिर अब की बार
यहाँ इन परछाइयों के साथ
सारी उम्र गुज़ारता बिताता
याद आते हैं गुज़रे वो पल
जो शायद कभी नहीं भूलाए जाते
आज क्यों न बिस्तर की सिलवटों को
ख़्वाबों की पौशाक पहनाएँ
शायद यह बादल फिर से
टुकड़े ट़कड़े हो जाए। ☐

जागता है दर्द

दर्द जागता है
अक़्सर दिल के इस नाज़ुक कोने में
जहाँ कभी प्यार पलता था
सिर्फ तुम्हारे लिए
सिर्फ तुम्हारे लिए
जहाँ कभी प्यार पलता था
जहाँ से तुम्हारा गुज़र हुआ कभी
अक़्सर तुम ने उन रास्तों को
महकाया अपनी खुश्बुओं से
वहाँ की विरानी को गुलज़ार किया
फासलों को तुम्हीं ने मिटाया
तुम्हीं ने दर्द दिया और तुम्हीं ने दी दवा
अब हमारे यहाँ तन्हाइयाँ पलती हैं
थाम लेती हैं दामन रुसवाइयाँ
तुम्हारी याद में अब ये आँखें
अश्क़बार रहती हैं
और जागता है दर्द अक़्सर इस
दिल के कोने में। ❑

मेरे साथ है

इन बरसातों में
दिल ने फिर याद किया उन्हें
उन्हें जो कभी दिल के
करीब थे पास थे
वो जिस ने कभी फ़िजाओं के साथ
गुनगुनाना सिखाया
वो जिसने कभी दर्द-ए-ग़म में
मुस्कुराना सिखाया-
वो जो कभी ख़त लिखा करते थे
शाम-ए-तन्हाई में
इज़हार-ए-मोहब्बत के साथ
बेइंतिहा याद भी करते थे
अब तू कहीं और मैं कहीं
पर ये ज़रूर लगता है
तू मेरे साथ- मेरे पास है
मेरे रू-ब-रू है
मेरा आग़ाज तेरी ज़ात है

मेरा अंजाम तेरी कायनात है
तेरा वस्ल ओ मेरे मेहबूब
मेरी हसरतों के साथ है। ❑

जागती उम्मीद

वो थे सिर्फ पानी पे
खींची लकीरें
इन्द्रधनुष की धूप
रेतीले आशीयाने
वहम-ओ-गुमाँ की
बुनियाद पे खड़े
उम्र के इस पड़ाव पे
तुम्हारे लौटने की
उम्मीद सी जागी है। ❑

सर्द मौसम में

मौसम है 'सर्द'
बर्फ़ीली हवाओं का अहसास है
ख़ामोश वादी में माज़ी कुछ
कहना चाहती है
मुझ को मुझी से
अलग करना चाहती है
रूहों की फ़रियाद यहाँ
सुने कौन
क्या बीते पल लौट आएंगे ?
क्या वक़्त की तेज़ धाराओं
से हमें भी गुज़रना होगा
साथ चलने का वादा निभा न सके
पास रहने की हसरत लिए बैठे हैं
क्यों ? ❑

उम्मीदों के फ़ासले

ये दुनिया है ख़्वाब की मानिन्द
यहाँ कुछ भी हमारा नहीं
बस ज़िन्दगी से एक समझौता है
जिसे हम निभाते हैं
अपनी खुशियों को
बरक़रार रखने के लिए
उम्मीदों के फ़ासले
कहीं करवट न लें
कहीं हमारी हसरतें
बिख़र न जाएं
पहले ही की तरह
इसलिए रहते हैं हमेशा इबादत में मसरूफ़
ग़रचि– तुम अब नहीं हो
पर दिल कह रहा है
कि तुम हो– यहीं हो
यहीं कहीं हो। ❑

बीते लम्हों की तपिश

चलो
चलें यहाँ से
सेहराओं में खेलें लुक्का छिप्पी
पिघलते रहें भरी दोपहरी तपिश में
मैं जानता हूँ
जानता हूँ मैं
तुम्हें दर्द झेलने की आदत है
और मैं भी तो चुप्प चाप
सहता आया हूँ
है हमें रात की ठंडक का इन्तज़ार
क्योंकि यहाँ हमें इन घुप्प अन्धेरों में
शीतलता का अहसास जो है
आओ!
यहाँ इन सेहराओं में खेलें
लुक्का छिप्पी
फिर से बीते लम्हों की
यादों को ताज़ा करें। ❑

बिखरते ख़्वाब

ख़्वाब क्यों न बिख़रते
शायद उनकी ताबीर
इसीलिए न हो सकी
तुम जुदा हो गए
यकायक तेज़ बारिश आ गई
इन पत्थरों को काट गई
शाख़ों से पत्ते टूट गए
हमारी नदी के पानी का रंग पीला हो गया
इन काली-घनी
अब्र आलूद घटाओं में ये
रोशनी कहाँ गुम हो गई
यहाँ ये खौफ़ हम पे तारी क्यों हो रहा है
और वक़्त ने बेखौफ़ होकर
अरमानों को ख़ाक में मिला दिया
तुम क्या चले गए
जीने के इरादे अब बदलने लगे
शामें रुसवा हो गईं और
सवेरे का सूरज तुलु होने से पहले ही
गुमनामी के सफ़र पर रवाँ है। ❑

आते तो हो

यहाँ आज इन प्यार की बरसातों में
कोई तो आए
पास बैठे
शायद फिर से यह मन बहल जाए
पिछले शब के पिछले पहर में
जब ख़्वाब में तुम भीगते आए
रूक गई बारिश
घने बादलों में से जैसे
चाँद दुल्हे का लिबास पहने
सितारों की बारात लेकर
तुम्हारी चौख़ठ पर दस्तक दे रहा हो
जैसे कह रहा हो हम तुम्हें
अपने साथ ले जाएंगे
अपनी पन्हाओं में सम्भाल के रखेंगे
शुक्रिया
आते तो हो
ख़्वाब में ही सही। ❑

बिखराव

साथ निभाने का अहद किया था कभी
और कभी दूर तक
चलने की ख़्वाहिश
जाहिर की थी
इसी मौसम में
फ़ुर्क़त के लम्हों से
रूब-रू-हुए
और क़स्मे वादे टूट गए
सामने एक बिखराव था
क्योंकि तुम जो चल दिए
एक अंजान राही के संग
और मैं
टूटता रहा मिटता रहा
बिखरता रहा। ❑

हिज़्र की लकीरें

बहते मौसम की हर रात पेरशान थी
सबर का पैमाना टूट गया
और
हिज़्र की लकीरें
हमारे बीच खिंच गई
उस पार तुम थे अपनी मायूसी के साथ
और
यहाँ दर्द निभाते-निभाते ज़िन्दगी
गुज़र गई
भूल जाते तुम्हें
दौर बदलते बदलते
पर ये न हो सका
क्योंकि ये रातें अब भी हैं
ख़मोश चुप्प चाप
और परेशान
तुम्हारे इन्ज़ार में। ❑

मंज़र

आरज़ुओं को बे-जान होते देखा
और देखी है मासूम
आँखों की तड़प
इन में छुपी सिसकियाँ
आहो ज़ारी
ख़ुद ही को ख़ुद से लिपटने की
आदत सी हो गई अब
देर रात शब के
आख़री पैहर
बादलों की ओट में
चाँद की
लुका-छुपी का मंज़र
बे-इंतहा दर्दनाक गुज़रा। ❑

तन्हा पत्थर

कुछ तो सपने थे
और कुछ हक़ीकत
रास्ते वो थे पर बीच राह
हमसफ़र खो गए
पल भर में यहाँ मौसम बदलते गए
और तर करते रहे
मेरी आँखों की ख़ामोशी
इस काले घने धुएँ में
तुम्हीं से मिलने की
जुस्तजू बरक़रार रही
और रात भर जलते रहे
बुझते रहे रौशनियों के चिराग़
फिर घिरे घिरे मेरे तुम्हारे
रास्ते सिमट गए
अब गुमनामी की इन बस्तियों में
तन्हा पत्थरों को तराश कर
क्या हासिल ? ❑

सावन

मौसम है तुम्हारी यादों का
बिछड़े हुए कई युग बीत गए
इन सावन की बारिशों में
भीगने का मंज़र
आज भी आँखों के सामने
ठहर जाता है
अब जब कई सावन आए
और आके चले गए
पर इन भीगती हुई
बारिशों में तुम्हारे मुस्कुराने का
सावन न जाने
क्यों ख़ामोश हो गया। ☐

बेचैनी

आज मौसम में ये कैसी
बेचैनी है
शायद उनकी आमद का
पैग़ाम ले कर आई है ये हवा
सदियों के फ़ासले पल भर
मिट जायेंगे
इस के भरोसे मत रहना
क्योंकि हर बार दस्तक दे चुकी है
'वो' मेरी दहलीज़ पर
वो जो अपना हाल-ए-दिल बयाँ
करने के लिये बरसों से
बेताब है
शायद इसीलिए ये मौसम की
बेचैनी मेरे सफ़र में
शामिल है। ❑

इबादत में शामिल

ग़र रूक गए थे क़दम
पर सफ़र तवील था
मुख़्तिसर सफ़र के दौरान
चाँदनी हमसफ़र बनी थी
ठगा ठगा सा मौसम
अगंड़ाइयाँ लेती ये हवायें
नाज़ुक-मुलायम यादों को अपनी
पनाहों में शामिल कर
मुझे रास्ता बताते
सफ़र को खुशनुमाँ बनाते
माज़ी के पलों को लौटाते
जो मैं उनसे लिपटता
उनको छू लेता
उनकी ख़ामोशी तोड़ता
फिर मैं कहता
तुम मेरी इबादतों में
शामिल हो
तुम्हीं मेरी मोहब्बत हो। □

ख़्वाब बन कर

ख़्वाब बनकर कोई आएगा
मेरा माज़ी दोहराएगा
बीती बातें याद दिलाएगा
मुझे ख़ुद से मेरी पहचान कराएगा
पर मुद्दतें हुई कोई ख़्वाब में
आया नहीं
शायद इसीलिए मैं बरसों से सोया नहीं
इसी इंतज़ार में बीत गए
साला–ह साल
ख़्वाब बन कर कोई आएगा
मेरा हाथ थाम लेगा
मुझे ले जाएगा दूर अपने साथ
बिठाएगा अपने क़रीब
अपने पास। ❑

यूँही बेवज़ह

ख़्वाब थे
पर रह गए अधूरे
हसरतों के मीनार दब गए सीनों में
अब पहले जैसे जज़बात कहां
पहले जैसी मुलाकातें कहां
पहले जैसा चाँद भी तो अब
कहां उगता है आसमानों में
न पहले जैसी तारों की बारात
उनकी टिमटिमाहट नज़र आती है
और
ना ही तुम्हारी जानिब
खुशबू मेरे पास से गुज़रती हैं
रूक गए अब क़ाफिले मोहब्बतों के
यूँही तुम याद आते रहे
तन्हाइयों में
शायद भुला बैठे हो
यूँही बेवज़ह। ❑

कोई तो है

मेरे
इन बन्द कमरों में कोई गुज़रता है
हर पल मेरे पास से
मेरे क़रीब से
ये धुन्धला-धुन्धला चेहरा
दिखाई भी देता है
और आहट भी सुनाई देती है
इन पैरों को छूने की हल्की
जुम्बिश महसूस होती है।
रात के इस सन्नाटे में
कोई तो है जो सुनता है
मेरे दर्द को
मेरे अकेलेपन की हर करवट को
महसूस करता है
मेरी धड़कनों की सिसकियों
को समझता है। ❑

वक़्त-बे-वक़्त

वो

कौन था जो दे गया फरेब

और

दे गया ज़ख्मों की बारिश

फिर ज़िन्दगी को सम्भाल न सके

आज मेरे मौसम ज़र्द हो गए

शाख़ों से पत्ते टूट गए

और हवा में

बिख़र गए

दौरान-ए-सफ़र छूट गए मेरे यार

मेरे अपने रास्ते गुम हो गए

इसीलिए शायद तुम न हो सके

हमारे

वक़्त-बे-वक़्त तुम याद भी आते रहे

मेरे अपनों की तरह भी

मेरी इबादत में शामिल रहे

और मैं सजदों में तुम्हीं से

मुख़ातिब रहा यूँही बेवज़ह। ❑

कुछ कहिए न

सुहाने मौसम में खुश्बू
बन कर आते हैं
और पूछते हैं मिज़ाज कैसे हैं
अपनी इबादतों में
दर-किनार करते हैं
और
मोहब्बतों के
सफ़र में साथ
चलने को कहते हैं
दूरियाँ बढ़ाते हैं
और पास से भी गुज़रते हैं
छूकर गुज़रते हैं
इन नज़ारों को अपने आँचल में
छिपाते हुए
हाथ पकड़ने की ज़िद्द करते हैं
कहते हैं-
कुछ कहिए न
फिर चुप रहने की क़सम देते हैं। □

बस यूँही

जाने कौन आज मेरी रुह

को छूकर गुज़रा

चाँद निकलने तक दरिया के

साहिल पर रूकने को कहा

मैं मौजों की रवानी देखता रहा

और अपना अक़्स ढूंढता रहा

इन पीले पानियों ने चाँद को मैला किया

पर मैं सोचता रहा अब

तुम्हारी आँखों से काज़ल

चुराने की फ़ुर्सत अब कहां है मुझे

और तुम्हारी नींदों में ख़्वाब

बन कर आने की हसरत

भी तो नहीं है

यार छोड़ गए तन्हा-तन्हा

यूँही बेवज़ह

यूँही बेवज़ह। ❑

अपने आसमान की तलाश

रिश्तों के इस मौसम में
कुछ अनकहे सवालात
कुछ अनसुनी बातें रह गई पीछे
शायद ये सोच कर कि हम
हद-ए-परवाज़ को छूने की
कोशिश करते रहे
करते रहे अपनी चाहतों-हसरतों
का बेसबरी से इन्तज़ार
इन बुलन्दियों में अपनी
परवाज़ लिए
अपने आसमानों को
तलाशने की कोशिश
भी करते रहे। ❑

तिलस्मई रौशनी

फ़ासलों के दरमियाँ
भीगा था मेरा प्यार
और रात चुपचाप
निकल गई
बिना कुछ कहे
बिना कुछ सुने
बस्तियों में चिराग़
झिलमिलाते रहे
और तिलस्मई रौशनी
अंधरों में डूबती रही। ❑

चाँदनी का अक़्स

जब उफ़क़ पर चाँदनी उतर आई
तुम ने ली मुस्कुराते हुए अंगड़ाई
हुस्न-ओ-शबाब था पूरे यौवन पर
और चाँदनी बरसती रही
बरसात के मौसम की तरह
दूर किसी कोने में
मैं यह सारा मंज़र अपनी
मदहोश आँखों की
पुतलियों में उतारता रहा
और तुम्हारे चेहरे पर
चाँदनी का अक़्स
भीगता रहा
फिर बदलता रहा मौसमों की तरह। ❑

आमद का मौसम

ज़रद पत्तों की इक शाम थी

यरकानी हवायें छूने को

थी बे-क़रार

क्योंकि

तुम्हारी आमद का

जो मौसम आया था

झीलों के किनारे

पानियों की गोद में

मैं अपना धुंधला

अक़्स ढूँढता रहा

पर अचानक तुम्हारे

फैले आँचल की

सरसराहट दस्तक दे गई

शुक्रिया, तुम्हारी नवाज़िश

जो सरशार कर गई। □

ख़ामोश पर्वत

कोहसारों की ख़ामोशी
इन्हें देखते-देखते गुज़र गई
ये ज़िन्दगी
रंग बदलते ये पर्वत
कई बार
कुछ कहने की कोशिश करते रहे
पर नहीं बोल पाए
सिर्फ़ आसमानों से यही
फरियाद करते रहे
अपनी खूबसूरत रहमतों
से नवाज़ें
हमारी इन ख़ामोशियों को। ❑

बर्फ़ पिघलने तक

ये दिल्लगी कहीं छूट न जाए पीछे
क्योंकि अपनी दुआओं में
मैं रब्ब से तुम्हें मांगता हूँ
हर पल चुरा लेता हूँ
तुम्हें, तुम्हीं से
यहां शामों में यहीं पर आकर
तुम्हें ढूढंता हूँ
तेरा इंतजार करता हूँ
बर्फ़ पिघलने तक
इन मौसमों के ग़ुम हो जाने तक
कहीं ये दिल्लगी छूट न जाए। ❑

सुलगती मुहब्बतें

परछाइयों के इस शहर में
अब खाली है मेरा आँगन
काश! कहीं से धूप निकल आती
शायद हम उनके दीदार कर पाते
और मैं उनको फिर से अपने सीने
की आग से रू-ब-रू कराता
एक अहसास जगाता
उन्हें महसूस कराता
कुछ कह पाता
शायद अभी भी सुलग रहा हूँ
उनकी मुहब्बतों में। ❑

ख़्यालों की रौनक

शायद समय की रफ़्तार थम चुकी है
तुम्हारे लौटने के इन्तजार का ये कैसा आलम
हवाओं की तरह आते हो
चले जाते हो
इस वादे के साथ कि फिर लौट आऊँगी
हमारी सितमज़रीफी देखिए
तुम्हारी आहटों को सिर्फ़ महसूस कर सकते हैं
पर छूने का तसव्वुर जेह-नो दिल से कौसों दूर
बेशक रुत बदले
मौसम बदले
लेकिन तुम्हारी मौजूदगी की ख़ुमारी
हमारी चाहतों को न बदल सकी
बख़्श गए ख़्यालों की रौनक
राहों को कर गए मुनअवर
मेहरबानी आप की। ❑

दुआओं में शामिल

सुहानी रातों में
एक परी आसमान से उतरी थी
मुझे छू कर गुज़र गई
मेरे बालों को सहलाती गई अपने दुपट्टे से
मेरी नीदों को चुरा ले गई
मेरे कानों में चुपके से कुछ-कुछ कह गई
ये कुछ लम्हें तुम्हारे नाम हो गए
इन को संजो कर सम्भाल कर रखिएगा
अपनी दुआओं में मुझे शामिल कर
मुझ पर अहसान जताया
नवाज़िश-करम-शुक्रिया। ❑

पथरीली राहें

हमारा ये सफ़र यूँ ही चलता रहा
और गुज़रती गई सदियाँ
पन्हागाहों में पन्हा लेने की ख़्वाहिश
सीने में ही दब गई
तुम से मिलना तुम से बिछड़ना
एक आदत सी बन गई
बीते लम्हे रूसवाई का रास्ता दे गए
और
पथरीली रेतीली राहें
मंजिल का पता बता गईं। ❑

दरियाओं के पत्थर

छूट गए साथी
सिमट गई ज़िन्दगी
ज़ज्बा मोहब्बत का टूट गया बिखर गया
हर पल अपना साया भी पराया होने लगा
जो मिले वो अचानक रूठ गए
यहां के साहिल दरियाओं से बिछड़ गए
और
इन दरियाओं के पत्थर
पानी के लिये तरस रहे हैं
इन्हीं पानियों में कभी चाँद
आकाश से उतर कर डुबकी लगाया करता था
पर अब कुछ अलग है
जब अपने ही पराए हुए। ❑

बातों बातों में

दिल की बातें हैं
बातें हैं और है तुम्हारी फरामोशी
रंग बिख़रे पड़े हैं
पर रक़्स करती है फिज़ा
शायद सोचा होगा
कि हवाओं के रूख़ में बदलाव होगा
पर ये ज़रूरी तो नहीं
कि मौसम बदलते ही तुम लौट आओगे
इन घने बादलों को चीर कर
और ये भी तो ज़रूरी नहीं
कि दिल की बातें हों
बातों-बातों में तुम याद आओगे। ❑

फ़ासलों के दरम्यान

एक प्यारा सा गाँव है
पर अजनबी रास्ते हैं
किस से मुख़ातिब हो जायें
हर कोई एक दूसरे से अन्जान है
इन फ़ासलों के दरम्यिाँ
अपने आप को भी पहचानना
मुश्किल सा लगता है
लेकिन इसके बावजूद
यहाँ खुश्बू है अपनेपन की
यहाँ मिठास है मोहब्बतों की
और दूर एक कोने में
यहाँ दर्द भी धड़कता है। ☐

इम्तिहान

ये जहां है फ़ानी

जो आया चला गया

न खत्म होने वाला जन्म मरन का ये सिलसिला

यूँही चलता रहेगा

पीछे रह जाती हैं यादें

यादें कुछ ख़ट्टी और कुछ मीठी

यादों के ये मीनार सवांरते हैं

सजाते हैं

महकाते हैं

जीवन के हर पल को

कितनी बार तेरी दहलीज़ से लौटा हूँ

क्या तुम मेरे सब्र का इम्तिहान ले रहे हो। ❑

चूड़ी

सहर होते ही
कोई हो गया रूखसत
गले मिलकर
फ़साने रात के
कहती रही
टूटी हुई चूड़ी। ❑

जिस्मों का क्या है

तन्हाई में मेरी रूह से अक़्सर
मेरी बात होती है
क्योंकि मैं
अकेला तन्हा-तन्हा हूँ
अब बेहतर है
मौसम-ए-खिज़ाँ में चिनारों से गिरते
इन पीले पत्तों को जलाया जाए
और इस आग की तपिश में झुलस जाएँ
जिस्मों का क्या है
ढलते हैं
जलते हैं
बिखरते हैं
रूह जो फ़ानी है
सिर्फ पौशाक बदलती है। ❑

तवील सफ़र

रास्ते हैं दुश्वार
पर मंजिल है क़रीब
दौरान-ए-सफ़र जो मिले वो छूट गए
रह गए पीछे अपनी यादों के साथ
माना यादें ज़िन्दगी का अहम सरमाया होती हैं
पर इस के बावजूद मैं जानता हूँ
कोई क्यों याद करे किसी को
जब ज़िन्दगी के इस तवील सफ़र में
रिश्तों ने अलविदा कहा हो
मुझसे चुपचाप देखा जाता नहीं
अग़र तेरे बस में हो
तो आ के मेरी तकदीर बदले दे। ☐

कभी यूँ भी तो हो

कभी यूँ भी तो हो
परियों की महफिल हो
मौसम हो बरसात का
और तुम आओ
कभी यूँ भी तो हो
ये नरम मुलायम हवायें तुम्हें छू कर गुज़रें
और तुम आओ
मेरी भूली बिसरी यादों में तुम शामिल हो
कभी यूँ भी तो हो
मेरे ज़ज्बात अहसास का आग़ाज बन पाते
कभी यूँ भी तो हो
तुम शामिल रहते मेरी रूह में
इन घटाओं में
मेरे हर मौसम में पिछले मौसम की तरह
कभी यूँ भी तो हो
तुम जो आते मेरा मकान घर बन जाता
और दीवारें बोलने लगती
कभी यूँ भी तो हो

तुम शामिल होते मेरे ख़्वाबों में

मेरी करवटों की तरह

कभी यूँ भी तो हो। ❑

बेवजह

आज ग़मज़दा दिलों को कौन समझाए
कि यहां सर-ए-आम महोब्बत होती है नीलाम
और बेवजह यूँ ही मन रहता है उदास
कौन यहां किसका है
कोई नहीं जान पाया
सब की आँखों में फरेब के आँसू बह रहे हैं
हर कोई सिमटे हुए पलों की रहनुमाई करता है
और नीलामी के बावजूद अपने
प्यार पर ऐतबार करता है
यूँही बेवजह आँखों में आँसू लिए
मोहब्बत का इन्तज़ार करता है। ❑

मैं हूँ न !

ग़रचि रुक जाती हैं
ये पागल हवाएँ ये फिज़ाएँ
तुम्हारे क़दमों की आहटों से
पर क्यों बे-वजह
तुम्हारी परेशानी सिसकियों में बदल जाती है
इन घने काले बादलों की तरह
तुम्हारे चेहरे पर मायूसी छा जाती है
मैं हूँ न!
हाँ हूँ न तुम्हारे साथ
तुम्हारे पास अमानत की तरह। ❑

हसरतें

इन बरसातों में

दिल ने फिर याद किया उन्हें

जो कभी दिल के क़रीब थे

वो जिसने फ़िजाओं के साथ गुनगुनाना सिखाया

वो जो कभी ख़त लिखा करते थे

और मोहब्बत का इज़हार करते थे

आज तुम कहीं भी हो मेरे साथ हो

मेरे रू-ब-रू तेरी ज़ात है

तेरा वस्ल ओ मेरी दिलरूबा

तेरी हसरतों का जो साथ है। ❑

यहीं हो

ये दुनिया है एक ख़्वाब की तरह
जहां कुछ भी हमारा नहीं
बस एक समझौता है
जिसे हम निभाते है
अपनी खुशियों को बरक़रार रखने के लिए
उम्मीदों के फ़ासले
कहीं करवट न लें
कहीं हमारे ख़्वाब न बिखर जाँए
पहले की तरह
इसलिए रहते हैं हमेशा इबादत में मसरूफ़
ग़रचे तुम नहीं हो
पर दिल कह रहा है
कि तुम यहीं हो
यहीं कहीं हो। ❑

अहसास-ए-मोहब्बत

बरसते बादल

झूमती हवाएँ

भीगती मुस्कान

ये खूबसूरत सुबहें

उम्मीदों का लिबास पहने हुए हसरतें हैं

किसी का साथी न छूटे

कोई किसी के ज़ज्बात से न खेले

अहसास मोहब्बत का

यूँही बरक़रार रहे। ❑

पहेली

जीवन क्या है
एक रहस्य या एक पहेली
एक ऐसा सच्च
जिसे शायद आज तक कोई न जान सका
और ये भी अपनी जगह सही है
कि जीवन है पानी का बुलबुला
मुठ्ठी में रेत की मानन्द जैसा
ये जीवन कब फ़िसल जाए हाथों से
हर कोई है बे-ख़बर रहता है
जीवन की इस पहेली को
न कोई समझा है
और न कोई जाना है। □

उड़ान

जो रुक गए क़दम तो शायद बहक गए

और भटक गए

यह रास्ते आख़िर जाते कहां हैं

क्या मुसाफिरों को मंज़िल मिल जाती है

बेशक सफ़र लम्बा हो

पर दौरान-ए-सफ़र साथी तो मिल जाना चाहिए

जो कभी पीछे छूट गए थे

वो शायद लौट के नहीं आएँगें

लेकिन नये परिंदे हमारे साथ

उड़ान तो भर सकते है। ❑

जाने क्यों ?

जाने क्यों
इन उदासी भरे लम्हों में
एक कसक सी उठती है दिल में
कि इन ख़ामोश पुरसुकून पर जज़्बाती रातों में
कोई आता है ज़रूर
और पैरों को छू कर दबे पाँवों निकलता है
यूँही मुस्कुराकर
मेरी करवटों को महका कर
अधूरी मुरादों को पूरा कर
इन बुझी शमाओं को रौशनी से भर देता है
जाने क्यों मेरी उम्मीदों को जगा देता है
है यूँही बेवज़ह। ❑

इस उम्मीद से

यहाँ विरानी के इन पत्थरों को
कभी पूजा था मैंने
इन सुलगती हवाओं को
कभी ओढ़ा था मैंने
और तुम्हें चाहा भी था कभी मैंने
वो जनून का दौर था
जब इश्क तुम्हारी मंज़िल हुआ करता था
और हम दूर से इन रास्तों पर
तुम्हीं को ताकते रहते थे
इस उम्मीद से
कि एक दिन
तुम हमें अपनी
इबादत में शामिल करोगे। ❑

कुछ तो है

कुछ तो है
जो तुम मुझे अपनी तरफ खींच लेते हो
मेरी अँगुली पकड़ते हो
मुझे ले जाते हो
अपने साथ बादलों के करीब
अपने अहसास में बसा लेते हो
यहाँ इस तन्हाई में
तुम्हें महसूस करना
हमारी खुशनसीबी है
तुम्हारे ओझल होने पर
ये चिराग़ जलते रहेंगे सहर तक। ❑

सिर्फ़ तुम ही

आज की शब

ठहर गया है वक़्त

हाँ वक़्त ठहर गया है

तुम्हारी फुर्कत में

कैसे जाने दूँ

इन लम्हों को

अपने से दूर

क्योंकि मेरा आग़ाज

मेरा अंजाम तुम से है

सिर्फ़ तुम्हीं से है। ❑

अधूरी चाहत

समय की इन तेज़ धाराओं से गुज़रते–गुज़रते
बीत गए कई युग
हर युग में समेटना चाहा
तुम्हें अपनी बाहों में
छेड़ना भी चाहा तुम्हें अपने अहसास में
उतारना भी चाहा अपनी धड़कनों में
बसाना भी चाहा
तुम्हें हमसफर बनाना चाहा
सजदों में बाक़ी उम्र बिताना चाहा
दुःख की परिभाषा है क्या?
तुम्हारे सुख की कल्पना करना चाहता था
मग़र ऐसा हो ना सका। ❑

तलाश-ए-सकून

यहाँ हर एक शख़्स
सकून की तलाश में भटकता है
बेशक ये रास्ते है दुश्वार
पर हौंसले हैं बुलन्द
अपनी परवाज़ लिए आकाश को छूने के
शायद आसमान के किसी कोने में
मिल जाए सकून
और कुबूल हो जाए हमारी दुआएँ
तुम्हारी बारगाह में जो सर बसजदा हुआ
बस चाहिए एक सकून का लम्हा। ❑

इल्तिजा

मोहब्बत एक अहसास है खुश्बू की तरह
सिर्फ इसे महसूस करने की ज़रूरत हैं
इन बुझी हुई महफिलों में
शायद ये रौनकें यूँही बरक़रार रहें
ग़र वक़्त से पहले तुम लौट आओ
तुम अक्सर कहा करते थे लौट आऊँगी
फिर से तुम्हारे आग़ोश में पन्हा लूँगी
और एक साथ मोहब्बत के
अहसास को महसूस करने की
हम दोनों कोशिश करेंगे
ताकि अधूरे वादों को निभाकर
हम पाय तकमील
तक पहुँचा सकें
यही मेरी रब से इल्तिजा है। ☐

ख़ामोश पानी

तुम रहते पास-पास

होते साथ-साथ

शायद फ़ुर्सत में हम तुम्हें चाहते

काश! फ़ुर्सत होती

दीवानेपन की हदों को दर किनार कर

ऐसा ख़्वाब अपनी आँखों में बसाने से क्या हासिल

जिस ख़्वाब की ताबीर न हो

मिला तुम से जो भी

वो ख़ामोश पानी की लकीरों जैसा ही है। ❑

पल भर के लिए

इन अधूरे ख़्वाबों को
हकीकत में बदलना होगा
कोई तो आए पल भर के लिए
हमारी निगहबानी कर सके
हाथ-थामे
हम मोहब्बत की सरहदों को मिटाएँ
एक हो जाएँ
इन जिस्मों को 'रूह' से अलग न करें
छिपाएँ अपने दर्द को
तुम्हारी हल्की मुस्कुराहट से। ❑

एक कसक

आख़री शब
तुम्हारी फ़रामोशी का अहसास तो दिलाती है
पर न जाने इन टूटे ख़्वाबों में
मैं क्यों तुम्हें अब भी
सम्भालने की नाकाम कोशिश करता हूँ
एक तड़प एक कसक अब भी है
अपने आग़ोश में तुम्हें पन्हा दे सकूँ
ताकि मैं भी तुम्हारे आँचल में अपना दर्द छिपा सकूँ
तुम पहले की ही तरह
मेरे बालों में अपनी नरम नाज़ुक
साफ़-ओ-शफ़ाफ अँगुलियों से
सहलाने की कोशिश तो करो। ❑

तुम्हारा करम

पेड़ों की छाँव में
नीले गगन के तले
हवाओं की सरसराहट
रुख़सार पर मुस्कुराहट
अब अनसुलझे सवालात
शब-ओ-रोज़ ख़्वाबों में दस्तक देना
मेरे पथरीले रास्तों को हरा कर
मुझे मेरे भटकाव से मुक्त करना
ये ही तेरा अहसास था
तुम्हारा करम
तुम्हारी नवाज़िश थी। □

अतीत के पन्ने

अचानक रूक जाते हैं
हमारे क़दम यहाँ बेवजह
जब कि अतीत के हर पन्ने को
हम न अपने पास रख सके
और न ही सम्भाल सके
अपने आने वाले कल को
ग़रचे तुम्हारा रौशन चेहरा
हमारी रूसवाई की वजह बन गया
पर तुम्हारे साथ बिताए हर पल को
शायद भूल जाना मुमकिन भी नहीं। ❑

मील का पत्थर

छूट गए हमारे अपने
ज़िन्दगी के इस कारवां में
बाक़ी अग़र पीछे रह गए
सिर्फ़ उन के क़दमों के निशान
ग़रचे सफ़र तवील था
पर सुहानी यादें मील का पत्थर साबित हुईं
अब जब कि कोई गुज़रता नहीं है इन रास्तों से
अक्सर दहशत तारी रहती है
तुम्हारे नहीं होने से। ❑

अभी भी

एक आहट
क्यों रुक गई मेरे आँगन में
एक परछाई क्यों मुझे छूने को है
बेक़रार बे-ताब
ये रिश्ता क्या कहलाता है
एक अहसास आज भी है
पलता है मेरे वजूद में
जीवन के हर हिस्से में
अभी भी कोई तो है
जो रिश्तों को बरक़रार रखे हुए है। ❑

चाँद का अक़्स

मैंने सुना है
यहीं से गुज़रता था वो
'वो' जो कभी मेरी छत पर आकर
तारों को गिनता था
चाँद की परछाई से लिपटता था
नज़ाकत भरी आँखों से
मेरी बेबसी मेरी लाचारगी को
अपने पास महफूज़ रखने की कोशिश में
हमेशा से ही मसरूफ हैं
अपने दुपट्टे से अपने ही चेहरे को ढकना
उनकी फितरत में शामिल है
दिल के ठहरे हुए पानी में
पत्थर मत फेंको
चाँद का अक़्स बनाया है बिखर जाएगा। □

उम्मीद कली

वो जो चाहतें बाँटते रहे
सर-ए-आम अपनी खुशिओं को नीलाम कर के
बावजूद इसके चेहरे पर मुस्कुराहट बनी रही
वह जीने का अंदाज़ जानता था
दूर पतंग की डोर पकड़ कर
खुले आकाश में
पतंग को उड़ाने का हुनर जानता था
उस की एक मुस्कुराहट लिए
अपनी मुस्कुराहट फिदा करता था
शायद ये सोच कर
कि एक दिन एक नन्हीं कली
खेलेगी उसके आँगन में
ढेर सारी मुस्कुराहटों के साथ। ❑

बादलों के टुकड़े

कहीं कोई भटकी मासूम मुस्कराहट
आज मेरी चाहत बन गई
मैंने तुम्हारे चेहरे से उसे चुरा लिया है
घने अबर-आलूद मौसमों में
तुम छिप जाते हो
कौस-ए-कज़ा का दामन थाम लेते हो
अक्सर बादलों के टुकड़े
दयारों में बदल जाते हैं
अनदेखी बस्तियों को राहत-बख्शते हो
हरारत से महफूज़ रखते हो। ❑

ख़्वाबों के शहर में

ये सोच कर कि
कोई मुझे ढूंढ तो ले
हम से अक़्सर वाबस्ता रहती हैं
दर्द की दास्तानें
तुम सुन कर क्या करोगी
जो लिखा है वो मिटाया नहीं जाता है
चुप हो जाते हैं
जब-जब बीते लम्हों में
तुम्हें खोजने की कोशिश करते हैं
ख़्वाबों के इस शहर में
क्या ये सब कुछ मुमकिन है। ❑

सोहबतें

तन्हा राहों में पन्हा लेना
अब ज़माने का दस्तूर हो चला है
वक़्त के साथ साथ
शक्लें बेशक बदल चुकी हों
पर एतबार पहले ही की तरह अटल है
सोहबतें सही रास्ता दिखाती हैं
और मंजिल का पता भी बताती हैं। ☐

सपने तो सपने होते हैं

कभी कभी
अन्जाने हादिसात यूँ घेर लेते हैं
कि अपने आप को अलग करना
ना-मुमकिन सा लगता है
अचानक कोई आकर
दस्तक देक़र चला जाता है
ज़ज़बात को ठेस पहुँचाकर
उन के दामन में पनाह लेने की ख़्वाहिश
दूर तक साथ-साथ चलने की
उम्मीद तो जग जाती है
पर पल में मिट जाती है यूँही बेवजह
हाँ बस यही मान के चलना पड़ता है
कि सपने कभी सच्च नहीं होते हैं
सपने तो सपने होते हैं। ❑

ख़्वाब की तरह

वो लम्हें हमारे अपने थे
जब चाँदनी रातों में
हम सितारों की दूरियाँ नाप लिया करते थे
इन का दर्द समझने की कोशिश करते थे
इन्हें तुम अपने आँचल में छिपा लिया करते थे
और इनसे हम कलाम हुआ करते थे
इन चाँदनी रातों में
हम दोनों इन सितारों को निहारते थे
हमें इनकी ख़ामोशी का अहसास था
और इन की सिसकियाँ
हमें महसूस हुआ करती थीं
पर अब ये सब ख़्वाब की तरह हैं
जो हकीकत से कोसों दूर हैं। ❑

दस्तूर

ख़ामोशी का अहसास अग़र है
तो बदलाव लाज़मी है
ग़र वक़्त के साथ-साथ
हम चले तो ज़ाहिर है
ये आकाश भी हमारी रहनुमाई करेगा
ज़मीन के हर ज़र्रे में
तड़प है कसक है
और बे-चैनी जारी रहती है
हम जीयें या मरें
ज़मीन और आसमान को इस से क्या लेना
सिर्फ यहाँ की धाराओं में बहना पड़ेगा
अपने आप को समझाना पड़ेगा
यहाँ कुछ भी हमारा नहीं
खाली आए और खाली जाएँगे
शायद कुदरत का यही दस्तूर है। ❑

मख़मली धुनें

चन्द अलफाज़
इन सांसों को ताज़गी बख़्शते
तुम्हारी सुरीली आवाज़ रूह से बात करती
यकायक जिस्म पिघलते
और जन्म होता फिर से हमारा तुम्हारा
इस वाद-ए-गुलपोश में
यहाँ दर्द के इन नग़मों को हम अलविदा कहते
नई सुबह के साथ ही
इन साज़ों पर छेड़ते मख़मली धुनें
तुम्हारी आवाज़ से आवाज़ मिलाते
शायद एक गीत को हम दोनों जन्म दे पाते
एक नए अदा-औ-अंदाज़ के साथ गा पाते। ❑

बदलते मौसम

इन नीले आसमानों में

हम खोजते हैं

अपनी अपनी विरान बस्तियाँ

आक्रोश भी है

कि ये बदलते मौसम

हमारे कभी क्यों नहीं हुए। ❑

संग-संग

यहाँ हर तरफ गूँजती हैं
सदा-ए-इश्क की
तुम्हारी आँखों में
झील जैसी ख़ामोशी में
बदलते मौसमों की झलक
दिखाई देती है
यहाँ हमारे संग-संग बादल तैरते हैं। ❑

बेबसी

इन फ़ासलों के दरमयाँ अब
सिर्फ़ तुम्हारी परछाई है
जिसे मैं हर पल महसूस करता हूँ
बिठाता हूँ अपने पास
सवांरता हूँ सजाता हूँ
तुम से बतियाता हूँ
ग़रचे इश्क था तुम्हारा वजूद
फिर भी तुम हमारे न हो सके
और तमाम सफ़र
परछाइयों के साथ ही गुज़र गया
यह ज़मीन चुप
आसमाँ चुप
सारा जहां चुप
मेरी बेबसी पर। ❑

शुरूआत

मुस्कुराहट है हुस्न का ज़ेवर
मुस्कुराना हमें भी सिखा दीजिए
अभी तो 'बहार' की शुरूआत है
मौसम बदलने में देर कहां लगती है
ये भी शिकवा नहीं
कि सब कुछ क्यों सहता रहा
बात इतनी सी है
कि मैं क्यों ख़ामोश रहा। ❑

यादों के साथ

रफ़ता-रफ़ता ज़िन्दगी रही तन्हा
गुज़रे दौर की यादों के साथ
जब-जब भी चले
सिर्फ़ अकेले चले
इन अन्जान रास्तों पे
जो कभी अपने थे
वो भी गुम हो गए खो गए
इन बदलते मौसमों के साथ
पर इस के बावजूद
जब दिल धड़कता है
तुम्हें याद करते हैं। ❑

कुछ भी याद नहीं

मेर मेहबूब

जब तुम रू-ब-रू थे

तब तुम से मिलने की बंदिशे रहीं

तुम्हें छूने की मनाही रही

तुम्हारे दुपट्टे का एक कोना

मेरे हाथ आते-आते निकल गया

जाने कहाँ गया कहाँ खो गया

कौन ले गया कुछ याद नहीं

कुछ भी याद नहीं

तुम्हारे साथ रह कर

तुम्हारे पास न रह सके

इन हवाओं के संग बहते गए

शायद बिखरते गए

तबाह होते गए। ❑

रुहों का सफ़र

हम तो मुसाफिर हैं
भटकते हैं
अपने ही साये के साथ
ये रहगुज़र अभी खाली हैं
यहाँ से गुज़रता कोई क्यों नहीं
सिलसिले थे मोहब्बतों के
तो ज़माने जुदा नहीं थे
आज जब रूक गए कदमों के फ़ासले
और मिट गई उम्मीदें
तो हुआ ज़माना बेज़ार
दूर तुम भी हो हम भी हैं
पर रुहों का ये सफ़र जारी है। ❑

यादों का सफ़र

यूँही बेक़रारी छा गई
जब तुम्हारे आने की आस लिए बैठे हैं
तो मिज़ाज में ये बदहवासी कैसी
सिरफिरे इस मौसम में
हवाओं के रूख में ये बैचैनी कैसी
इन सब्ज़-ज़ारों में
तुम्हारी आमद की खुश्बू आज लरज़ती क्यों है
क्यों तुम्हें देखने चाँद उतरा है
इस झील में
और लहरें साहिल से टकराती क्यों नहीं
मौसम था तुम्हारी यादों का
और हम पानियों की गोद में
जलते सूरज को ढूँढ रहे थे
शायद सूरज के साथ-साथ
हम तुम्हारी यादों के सफ़र को
तय कर रहे हैं। ❑

सर्दियों की धूप

खूब रूलाना
खुल के हंसाना
तुम्हारी शरारतों में शामिल है
जुदाई तो एक बहाना है
क़समे वादे निभाना
सर्दियों की धूप जैसी है
टुकड़ों में बंट गए
हसरतों के मिनार
यूँही बेवजह। ❑

सुहानी रातों में

आज इन सुहानी रातों में
एक परी कहीं आसमानों से
उतरी तो नहीं... शायद
मुझे छू कर गुज़र गई
मेरे बालों को सहलाती गई
अपने दुपट्टे से
मेरी नीदों को चुरा ले गई
मेरे कानों में चुपके से कुछ कहकर
चली गई
ये कुछ लम्हें आज तुम्हारे नाम कर गए
यही कह गई
इनको संजो कर
सम्भाल कर रखना
और मैंने कहा
अपनी दुआओं में शामिल कर
एक अहसान जताना
कभी लौट आना
फिर से इन सुहानी रातों में
नवाज़िश-करम-शुक्रिया। ❑

दिल की बातें

दिल की बातें हैं... बातें हैं
और है अब तुम्हारी फ़रामोशी
रंग बिखर पड़े हैं पर रक़्स करती हैं फिज़ाएँ
शायद सोचा होगा
कि हवाओं के रूख़ में बदलाव होगा
पर ये ज़रूरी तो नहीं
कि मौसम बदलते ही तुम लौट आओगे
इन घने बादलों को चीर कर
और ये भी तो ज़रूरी नहीं कि
दिल की बातें हों
बातों-बातों में तुम याद आओगे। ❑

मुलाकातें

जब बात चली है
तो आज मेरी सितारों से बात हुई
सितारे जो दूर आसमानों में जा बसे हैं
तन्हा तन्हा ख़ामोश अपना वजूद लिए
दबी दबी मुस्कुराहटों का ज़ेवर पहने हुए
खुशबुओं का लिबास
मोहब्बतों की चादर औढ़े
ये सितारे जो अक्सर घुप्प अंधेरों में
तैरते हैं इन बादलों के साथ
रात भर पहरेदारी में मसरूफ़
आसमानों की निगहेबानी में
मुंतिज़र हर पल
हमारी मुलाकातों में शामिल ये सितारे रहते हैं
बे-परवाह। ❑

❑❑❑

अपने प्रथम काव्य-संग्रह 'हथेली के आईने में' की कविताओं की भाँति ही इस संग्रह की कविताओं में भी अपने साथी का इन्तजार है, बीते पलों की स्मृतियाँ हैं, अधूरे ख़्वाब हैं, ख़्वाबों में हकीकत की तलाश है, सिसकती तड़पती, लरज़ती हसरतें हैं। किसी अपने को मनाने की इल्तिजा है। कवि मराठा अपनी रूह से महसूस किये अहसासों, सूक्ष्म ज़ज़बातों तथा अपने भीतर व बाहर के मौसम को एकदम अनूठे भौतिक कुदरती प्रतीकों से प्रकट करने की महारत रखते हैं, इन्होंने ही रमेश मराठा की कविताओं को मौलिकता, नवीनता तथा ताज़गी बख़्शी है। जो कवि रमेश मराठा की कविताओं की पहचान है तथा उन्हें अन्य कवियों से अलग करती है।

यही वह खूबी है, जिस कारण उनकी कविताओं को हरेक वर्ग व उम्र का पाठक पसंद करता है। कवि मराठा अपनी किसी उच्च कलात्मकता का दावा पेश नहीं करते है, लेकिन **'तैरते बादलों में एक शाम'** की कविताएं रमेश मराठा के काव्यात्मक कद को बरकरार रखने में सहायक सिद्ध होती हैं।

— डॉ. धर्मपाल साहिल
(राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित)
dpsahil_panchvati@yahoo.com
09876156964

रमेश मराठा

वरिष्ठ उद्घोषक, आकाशवाणी (जे एंड के)

कृति : हथेली के आईने में (काव्य-संग्रह)

सम्पर्क : हाउस नंबर 53, दुर्गा नगर,

सेक्टर-1, जम्मू

मोबाइल : 94192 45577